

Padma Shri



SHRI DHANIRAM TOTO

Shri Dhaniram Toto is the person who has played a great role to preserve an endangered language 'Toto' and making people aware about the importance of their culture and language. He is a government employee who belongs to a small tribe Toto'.

2. Born on 11th June, 1964, Shri Toto started his primary education from Totopara Primary School. He did his Matriculation from Rampur Singimari Higher Secondary School. Later, he joined BCW SC/ST Welfare Department as a Social Worker in 1991. He is still associated with this Department.

3. The engrossment of Shri Toto in his culture and tradition is praiseworthy. He has represented Toto folk culture, tales, and songs through his writings. Also, he has written poems and novels in Bengali language. Despite all the odds, his dedication towards the Toto culture and developing Toto Script is commendable. His work on Toto Alphabet was completed in 2018. He represented Toto tribe in Delhi on 23rd January, 1993, on the invitation of the then President Dr. Shankar Dayal Sharma and the Prime Minister Shri Narshima Rao.

4. Shri Toto has been honoured with many Awards like 'Tamro Patro' from West Bengal Government in 1997; 'Samaj Sanskriti Puruskar' for his work on Toto folk culture; 'Sahitya Puruskar' for his novel "Dhanua Totor kothamala" in 2021 and Dooars Ratna-2019 etc.



श्री धनीराम टोटो

श्री धनीराम टोटो वह व्यक्ति हैं जिन्होंने लुप्तप्राय भाषा 'टोटो' के संरक्षण और लोगों को अपनी संस्कृति और भाषा के महत्व के बारे में जागरूक करने में बड़ी भूमिका निभाई है। वह एक सरकारी कर्मचारी हैं जो एक छोटी सी जनजाति टोटो से संबंध रखते हैं।

2. 11 जून, 1964 को जन्मे श्री टोटो ने अपनी प्राथमिक शिक्षा टोटोपारा प्राथमिक विद्यालय से शुरू की। उन्होंने रामपुर सिंगीमारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से मैट्रिक की। बाद में, 1991 में वह बीसीडब्ल्यू एससी/एसटी कल्याण विभाग में एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में शामिल हो गए। वह अभी भी इसी विभाग से जुड़े हुए हैं।

3. अपनी संस्कृति और परंपरा के प्रति श्री टोटो का गहरा लगाव सराहनीय है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से टोटो लोक संस्कृति, कहानियों और गीतों को प्रस्तुत किया है। इसके अलावा, उन्होंने बंगाली भाषा में कविताएं और उपन्यास लिखे हैं। सभी बाधाओं के बीच, टोटो संस्कृति और टोटो लिपि विकसित करने के प्रति उनकी निष्ठा प्रशंसनीय है। टोटो वर्णमाला पर उनका कार्य 2018 में पूरा हो गया था। उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा और प्रधान मंत्री श्री नरसिंहा राव के निमंत्रण पर 23 जनवरी, 1993 को दिल्ली में टोटो जनजाति का प्रतिनिधित्व किया।

4. श्री टोटो को 1997 में पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से 'ताम्रो पात्रो'; टोटो लोक संस्कृति पर उनके काम के लिए 'समाज संस्कृति पुरस्कार'; 2021 में उनके उपन्यास "धनुआ तोतोर कोठामाला" के लिए 'साहित्य पुरस्कार' और दुआर्स रत्न-2019 आदि जैसे अनेक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।